ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(1): 443-447
www.allresearchjournal.com
Received: 15-11-2022
Accepted: 21-12-2022

मो० इम्बेसातुल हक
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० एम० हसन
[1] प्राचार्य, डॉ० ज़ाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत
[2] सह संकायाध्यक्ष, (शिक्षा संकाय), ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
मो० इम्बेसातुल हक
शोधार्थी, शिक्षा संकाय, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को सृजनात्मक चिंतन शक्तियों का उनके व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन

मो० इम्बेसातुल हक, डॉ० एम० हसन

सारांश
सृजनात्मकता चिंतन शक्तियों का वर्तमान सदी में सबसे अधिक प्रशंसित सीखने के कौशल में से एक है। एक प्रभावी और उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए रचनात्मकता का विकास आवश्यक माना गया है। इसके अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोणों के रूप में, सृजनात्मकता को एक परिणाम के रूप में परिभाषित किया गया है, एक प्रक्रिया के रूप में, एक निर्माण के रूप में संदर्भ और अनुभव के प्रभाव से और मानव स्वभाव की एक व्यक्तित्व विशेषता के रूप में। इस योगदान का उद्देश्य इस तरह के निर्माण की समझ हासिल करने के लिए उल्लेखित दृष्टिकोणों से सृजनात्मकता के अध्ययन की व्याख्या करना है। इसके अलावा, शैक्षिक दृष्टिकोण से सृजनात्मकता के विकास को उजागर करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो शिक्षण और सीखने की प्रक्रियाओं में रचनात्मक रणनीतियों के उपयोग और अनुप्रयोग के विवरण, निहितार्थ से शुरू होता है। अंत में, समस्या-समाधान प्रक्रिया में इन रणनीतियों को शामिल करने पर जोर देने के साथ साहित्य में पाई जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण या प्रासंगिक रणनीतियों का संक्षिप्त विवरण है।

कूटशब्द : सृजनात्मक चिंतन, शैक्षिक दृष्टिकोण, समस्या-समाधान

प्रस्तावना
सृजनात्मक चिंतन एक आसान मानवीय प्रवृत्ति है। इसका प्रयोग व्यक्ति प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में करता है। व्यक्तिगत मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है। सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास शिक्षक, बालकों के व्यक्तित्व गुणों को ध्यान में रखकर कर सकते है एवं उनके मूल्यों को समझ सकते हैं। उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। सृजनात्मक चिन्तन मापनी एवं व्यक्तिगत मूल्य मापनी के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पाया गया कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति एवं व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग एवं क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति एवं सामाजिक मूल्य, प्रजातांत्रिक मूल्य, ज्ञान मूल्यों में धनात्मक सह संबंध होता है।

मानव जीवन में शिक्षा की अहम् भूमिका है। बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाने का कार्य शिक्षा ही करती है । शिक्षा के माध्यम से ही समाज अपनी संस्कृति की रक्षा करता है। जीवन में उदारता, उच्चता, चिन्तन, सृजन, सौन्दर्य एवं उत्कृष्टता शिक्षा द्वारा ही संभव है।

शिक्षक, सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास, बालक के व्यक्तित्व के गुणों को ध्यान में रखा सकता है एवं उनके मूल्यों को समझ सकता है। वह सृजनशील विद्यार्थियों को उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान कर सकता है।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक कारक एक दूसरे को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित करते हैं। यह अत्यावश्यक है कि विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास हेतु मनोवैज्ञानिक कारकों से शिक्षक परिचित हों। प्रस्तुत शोध में सृजनात्मकता एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने का प्रयास किया गया है। शोध से प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार सृजनात्मकता पर धनात्मक प्रभाव पाया गया है। यदि किसी छात्र में संवेगात्मक बुद्धि अधिक हो तो उसे सृजनात्मक कार्यों की ओर प्रेरित किया जा सकता है। उसी प्रकार संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि में भी धनात्मक सह-संबंध पाया गया। यदि किसी उच्च संवेगात्मक बुद्धि वाले विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि संतोषप्रद न हो तो संभावित कारणों का पता लगाकर तथा संवेगात्मक बुद्धि के विकास द्वारा समस्या का समाधान किया जा सकता है।

व्यक्ति के मानसिक विकास में संवेगों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। सुखद संवेगात्मक स्थिति होने पर मानसिक स्वास्थ्य में भी वृद्धि होती है। साथ ही उसकी सभी मानसिक शक्तियाँ एवं क्षमताएँ अधिक सक्रियता से कार्य करने में सहयोग करती हैं अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य हेतु सकारात्मक संवेगात्मक बुद्धि का होना आवश्यक है । यह भी सत्य है कि बुद्धि एवं सृजनात्मकता में संबंध होता है। बच्चों की सृजनात्मकता की प्रवृत्ति ज्ञात होने पर उन्हें नवीन आविष्कार एवं अनुसंधान के लिए प्रेरित कर उनका आत्मबल एवं विश्वास बढ़ाया जा सकता है। अतः बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करने के लिए एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के लिए सकारात्मक संवेगात्मक वातावरण के निर्माण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

अध्ययन की आवश्यकता

सामान्यतः यह कहा जाता है कि सृजनात्मक चिंतन एक आसान मानवीय प्रवृत्ति है। इसका प्रयोग व्यक्ति प्रतिदिन की समस्याओं के समाधान में करता है। व्यक्तिगत मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होती है। सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास शिक्षक, बालकों के व्यक्तित्व गुणों को ध्यान में रखकर कर सकते है एवं उनके मूल्यों को समझ सकते हैं। उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। सृजनात्मक चिन्तन मापनी एवं व्यक्तिगत मूल्य मापनी के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर पाया गया कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति एवं व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग एवं क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः शोधकर्ता को विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन के सन्दर्भ में अध्ययन की आवश्यकता हुई।

अध्ययन का उद्देश्य

1. विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों में निहित व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्य तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति में संबंध ज्ञात करना।

अध्ययन क्षेत्र

समय एवं साधनों की सीमितता के कारण इस शोध की सीमाएं इस प्रकार है-

1. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल दरभंगा शहर एवं निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों को लिया गया है।
2. समय की अति अल्पता के कारण केवल 160 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में रखा गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का सांख्कीय विश्लेषण किया गया। विद्यार्थियों में सृजनात्मक चिन्तन शक्ति को देखने के लिए टी टेस्ट का प्रयोग किया गया। जिसके परिणामों की व्याख्या इस प्रकार है-

तालिका 1: सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता

लिंग	संख्या	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
बालक	80	65.38	17.58	159	0.48	0.05	NS
बालिका	80	59.83	19.51				

तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है कि बालकों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के प्रदत्तों का मध्यमान 65.38 तथा प्रमाणिक विचलन 17.58 एवं बालिकाओं की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 59. 83 तथा प्रमाणिक विचलन 19.51 प्राप्त हुआ । बालक/बालिकाओं की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जांच के लिए 'टी' परीक्षण किया गया, जिसका मान 0.48 प्राप्त हुआ। 159 df तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर t का सारणीगत मान 1.96 है। गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से कम है । अत: परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष से यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता ।

तालिका 2: सरकारी/गैरसरकारी बी.एड. प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभियोग्यता

लिंग	संख्या	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर	परिणाम
शहरी	80	63.21	19.10	159	0.66	0.05	NS
ग्रामीण	80	62	18.43				

तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है कि शहरी विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 63.21 तथा प्रमाणिक विचलन 19.10 एवं ग्रामीण विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन शक्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान 62 तथा प्रमाणिक विचलन 18.43 प्राप्त हुआ। शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जाँच के लिए 't' परीक्षण किया गया जिसका मान 0.66 प्राप्त हुआ । 't' का सारिणीगत मान 159 df पर 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 है। गणना द्वारा प्राप्त मान सारणीगत मान से कम है। अतः विद्यार्थियों की सृजनात्मक शक्ति पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 3: विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव

मूल्य	लिंग	संख्या	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर 0.05
धार्मिक	बालक	80	12.99	3.07	159	0.77	अंतर नहीं
	बालिका	80	62	18.43			
सामाजिक	बालक	80	13.5	3.18	159	0.53	अंतर नहीं
	बालिका	80	13.19	2.89			
सौंदर्यात्मक	बालक	80	11.19	2.45	159	0.5	अंतर नहीं
	बालिका	80	11.44	3.32			
आर्थिक	बालक	80	9.99	3.32	159	0.28	अंतर नहीं
	बालिका	80	10.56	3.13			
ज्ञान	बालक	80	13.54	3.05	159	0.12	अंतर नहीं
	बालिका	80	12.71	2.93			
शक्ति मूल्य	बालक	80	9.84	2.83	159	0.06	अंतर नहीं
	बालिका	80	10.68	2.62			
पारिवारिक प्रतिष्ठा	बालक	80	12.89	3.04	159	0.46	अंतर नहीं

	बालिका	80	12.54	3.00			
स्वास्थ्य	बालक	80	11.18	2.75	159	0.26	अंतर नहीं
	बालिका	80	10.73	2.54			

तालिका संख्या 03 से स्पष्ट है कि परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष के अनुसार विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके लिंग का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 4: विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव

मूल्य	लिंग	संख्या	M	SD	df	t	सार्थकता स्तर 0.05
धार्मिक	शहरी	80	13.34	2.95	158	0.28	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	12.78	3.21			
सामाजिक	शहरी	80	14.04	3.04	158	0.03	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	12.7	2.89			
सौंदर्यात्मक	शहरी	80	11.29	2.67	158	0.09	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	11.34	2.51			
आर्थिक	शहरी	80	9.86	3.31	158	0.11	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	10.69	3.12			
ज्ञान	शहरी	80	13.09	3.16	158	0.87	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	13.16	2.87			
शक्ति मूल्य	शहरी	80	10.1	2.88	158	0.49	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	10.41	2.61			
पारिवारिक प्रतिष्ठा	शहरी	80	12.46	3.82	158	0.32	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	12.96	3.20			
स्वास्थ्य	शहरी	80	11.2	2.83	158	0.24	अंतर नहीं
	ग्रामीण	80	10.7	2.43			

आंकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 5: विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन शक्ति तथा उनके व्यक्तिगत मूल्यों के विभिन्न घटकों के बीच सार्थक सह संबंध

मूल्य	सृजनात्मक चिंतन	संख्या	df	r	धनात्मक/ऋणात्मक
धार्मिक	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	–0.057	ऋणात्मक
सामाजिक	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	0.346	धनात्मक
सौंदर्यात्मक	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	–0.061	ऋणात्मक
आर्थिक	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	–0.330	ऋणात्मक
ज्ञान	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	0.251	धनात्मक
शक्ति मूल्य	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	–0.210	ऋणात्मक
पारिवारिक प्रतिष्ठा	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	0.028	धनात्मक
स्वास्थ्य	सृजनात्मक चिन्तन	168	158	0.008	धनात्मक

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों के सामाजिक, ज्ञान, परिवार प्रतिष्ठा एवं स्वास्थ्य मूल्य का सृजनात्मक चिन्तन के साथ धनात्मक सह–संबंध प्राप्त हुआ है जबकि विद्यार्थियों के धार्मिक, सौंदर्यात्मक, आर्थिक, एवं शक्ति मूल्य का सृजनात्मक चिन्तन के साथ ऋणात्मक सह-संबंध पाया गया।

निष्कर्ष

सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास, बालक के व्यक्तित्व के गुणों को ध्यान में रखा सकता है एवं उनके मूल्यों को समझ सकता है। वह सृजनशील विद्यार्थियों को उचित वातावरण प्रदान कर उनकी प्रतिभा को विकसित करने का सुअवसर प्रदान कर सकता है। प्रस्तुत आलेख में संकलित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. बालक/बालिकाओं की सृजनात्मक चिंतन शक्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिंतन शक्ति पर उनके क्षेत्र का सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. छात्रों एवं छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों में अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. शहरी एवं ग्रामीण बालकों के व्यक्तिगत मूल्यों में कोई अंतर नहीं पाया जाता है।
5. विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में ऋणात्मक सह संबंध होता है।
6. विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में उच्च कोटि का धनात्मक सह–संबंध होता है।
7. विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध होता है।
8. विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य ऋणात्मक सह–संबंध पाया गया है।
9. विद्यार्थियों के ज्ञान मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के मध्य धनात्मक सह-संबंध होता है।
10. विद्यार्थियों के शक्ति मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के बीच ऋणात्मक सह-संबंध पाया गया।
11. विद्याथियों की परिवार प्रतिष्ठा मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति के बीच धनात्मक सह–संबंध पाया गया।
12. विद्यार्थियों के स्वास्थ्य मूल्य एवं सृजनात्मक चिंतन शक्ति में सार्थक सह-संबंध पाया गया।

संदर्भ

1. सिंह, प्रेमपाल (2017): माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन। जर्नल ऑफ सोशियों एज्यूकेशन एण्ड कल्चरल रिसर्च, वोल्यूम 3(7), जुलाई दिसम्बर 2017
2. डोनेनगावंवं कर, निषा (2010): माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का उनकी व्यवसायिक अभिरूचि के सन्दर्भ में अध्ययन
3. कौशर, एफ (1982): बुद्धि, सृजनात्मक एवं व्यक्तित्व का बच्चों की जिज्ञासा से संबंध का अध्ययन
4. राजगोपेपाल, एस. (1988): सृजनात्मकता के अन्तर्गत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों पर कक्षागत वातावरण, उपलब्धि परीक्षण और मानसिक योग्यता का अध्ययन।
5. राव, नारायण (1964): विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन।